

विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति

गृह पत्रिका

अंक - 17

हिन्दी दिवस विशेषांक

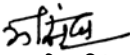
जुलाई - सितम्बर 2010

सम्पादकीय

14 सितम्बर हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में संपूर्ण देश के सरकारी कार्यालयों में एक उत्साह का माहौल होता है। कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2010 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया एवं 7 अक्टूबर 2010 को पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवधि में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे हिन्दी निबंध भाषण, स्लोगन आदि में प्रतिभागियों की लेखन शैली, वक्तृत्व, कल्पनाशक्ति उभरकर आयी। इस जोशपूर्ण माहौल से राजभाषा नीति कार्यान्वयन में पुनः ताजगी भर जाती है।

सितम्बर माह में एक और महत्वपूर्ण दिन मनाया जाता है और वह है '15 सितम्बर : अभियंता दिवस'। भारत रत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेसरैया जी के जन्म दिन को 'अभियंता दिवस' मनाया जाता है। आप अपने काम के प्रति समर्पित एवं अनुशासनप्रिय थे। आपकी कर्तव्य के प्रति निष्ठा, अलौकिक बुद्धि, कर्मठता, अवर्णनीय स्मरण शक्ति, जरूरतमंदों को अन्न, वस्त्र, शिक्षा की सहायता करने की उदारता, आपकी 'भारत रत्न' उपाधि को सार्थ ठहराती है। आपने एक बार कहा था "सदा याद रखिए, आपका काम भले ही रेलवे क्रॉसिंग को स्वच्छ रखना हो, पर आपका कर्तव्य इस लगन से निभाओ कि दुनिया का कोई और रेलवे क्रॉसिंग आपके क्रॉसिंग जितना साफ सुथरा न हो।

तो आइए, हम भारत रत्न सर एम. विश्वेसरैया जी के आदर्शों और किए गए कार्यों से प्रेरित होकर अपने कर्तव्यों को लगन और निष्ठापूर्वक करें।


(मनजीत सिंघ)
सदस्य सचिव

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपुहि शीतल हो ॥

-संत कबीर

राजभाषा समाचार

- ❖ दिनांक 25 अगस्त 2010 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'कम्प्यूटर पर कार्य: समस्या एवं समाधान' विषय पर श्री प्रमोद कुमार लोणे, सहायक निदेशक श्रे.-I ने व्याख्यान दिया।
- ❖ राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 91 वीं बैठक दिनांक 30.07.2010 को श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।
- ❖ कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर 2010 से दिनांक 28 सितम्बर 2010 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया।
- ❖ वर्ष 2009-10 की अवधि में कार्यालय में कुल 5 प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गयी थी। हिन्दी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर दिनांक 7 अक्टूबर 2010 को उपरोक्त प्रोत्साहन योजनाओं के विजेता कुल 7 अधिकारियों एवं 17 कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

पक्षे वि स समाचार

- ❖ इस तिमाही में पक्षेविस की 14 वीं बैठक दिनांक 18 अगस्त 2010 को आयोजित हुई। इसके अलावा टीआरएम (पारेषण समीक्षा प्रबोधन), रक्षण समिति की बैठकें हुई।
- ❖ केन्द्रीय विद्युत नियामक आयोग के (पारेषण प्रभार एवं क्षति का शेयरिंग), 2010 के प्रावधानों के अनुसार क्षेत्रीय पारेषण प्रभार जो कि POC आधार पर निर्धारित किये जाने हैं, जो दिनांक 01.01.2011 से कार्यान्वित होंगे। इस संदर्भ में कार्यान्वयन समिति की दूसरी बैठक दिनांक 21.09.2010 को दिल्ली में हुई। उ.भा.प्रे.केन्द्र द्वारा आयोजित कैपेसिटी बिल्टिंग वर्कशाप में सभी घटकों के अधिकारियों को उपरोक्त प्रावधानों से विस्तार से अवगत कराया गया।
- ❖ श्री एस.जी. टेनपे, अधीक्षण अभियंता, प.क्षे.वि.समिति, मुंबई का स्थानान्तरण दिनांक 27 अगस्त 2010 को क्षेत्रीय निरीक्षण संगठन (प.), मुंबई में हुआ।

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस 2010 की रिपोर्ट

पक्षेविसमिति, मुंबई में दिनांक 14 सितम्बर 2010 से 28 सितम्बर 2010 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया । कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने की दृष्टि से हिन्दी पखवाड़े के दौरान कुल 12 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं ।

हिन्दी पखवाड़े के उपलक्ष्य में कार्यालय में आयोजित की गयी विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं की रूपरेखा इस प्रकार तैयार की गयी थी कि इनमें सभी श्रेणी के अधिकारी / कर्मचारी जैसे कि तकनीकी, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी तथा चतुर्थ श्रेणी तक के कर्मचारी भी भाग ले सकें और हिन्दी में सोचना, लिखना, कला प्रस्तुत करना आदि गुणों को प्रोत्साहन मिले ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं:

1. हिन्दी निबंध (क, ख वर्ग)
2. हिन्दी निबंध (ग वर्ग)
3. कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण
4. हिन्दी निबंध (क, ख एवं ग वर्ग सभी के लिए एक विषय)
5. भाषण (क, ख वर्ग)
6. भाषण (ग वर्ग)
7. हिन्दी श्रुतलेख (हिन्दीतर भाषियों के लिए)
8. हिन्दी दिवस समारोह अंताक्षरी / प्रश्न मंच
9. हिन्दी वाचन (हिन्दीतर भाषियों के लिए)
10. हिन्दी टिप्पण आलेखन
11. हिन्दी वाचन - लेखन (तत्कालीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी)
12. घोष वाक्य / स्लोगन

दिनांक 14 सितम्बर 2010 को कार्यालय में हिन्दी दिवस मनाया गया । इस अवसर पर अंताक्षरी / प्रश्न मंच का आयोजन किया गया । जिसमें कार्यालय के अधिकांश अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

हिन्दी पखवाड़ा 2010 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कुल 32 अधिकारी / कर्मचारियों में से 27 कर्मिकों ने भाग लिया । इनमें से अधिकतर अधिकारियों / कर्मचारियों ने एक से अधिक प्रतियोगिता में भाग लिया । इस प्रकार 12 प्रतियोगिताओं में कुल 107 प्रतियोगियों ने भाग लिया (विजेताओं की सूची संलग्न है) । अन्य अधिकारियों ने कुछ प्रतियोगिताओं में निर्णायक का कार्य किया । हिन्दी दिवस समारोह एवं समापन समारोह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी अधिकाधिक अधिकारियों / कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । इस प्रकार हिन्दी पखवाड़े के आयोजन में सम्पूर्ण कार्यालय का सहभाग रहा ।

हिन्दी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह दिनांक 7 अक्टूबर 2010 को कार्यालय के सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया । इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों ने गीत, कविताएँ, चुटकुले आदि

प्रस्तुत किए । तत्पश्चात श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव के कर कमलों से विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गए । इस पुरस्कार वितरण समारोह में हिन्दी प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों के साथ ही वर्ष 2009-10 के दौरान कार्यालय में लागू 5 प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को भी पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए । तत्पश्चात सदस्य सचिव महोदय ने अपने संबोधन में सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि हिन्दी पखवाड़े के कार्यक्रमों से प्रेरणा लेकर संपूर्ण वर्ष में सभी अधिकारी / कर्मचारी अपने हिन्दी कार्य को बढ़ावा दें । कार्यक्रम का मंच संचालन सुश्री तरुप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने सुरुचिपूर्ण ढंग से किया । श्री एम.एम.धकाते, राजभाषा अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

_

जीवन

श्री मनजीत सिंघ,
सदस्य सचिव

जीवन एक सुंदर कलाकृति है । इस कलाकृति की सुंदरता को द्विगुणित करने वाली अनेक बातें मनुष्य को अपनी जिंदगी में पूरी करनी है । मनुष्य को इस गतिशील युग के साथ दौड़ते हुए जिंदगी के हर मोड़ पर संघर्ष करना पड़ता है और अगले सफर के लिए प्रयाण करना पड़ता है । निसर्ग सफर में ऋतुमानों का ख्याल करना पड़ता है । तभी उसे निसर्ग की अद्भुत लीलाओं के साक्षात्कार करने का सुनहरा मौका मिलता है । जिंदगी में मनुष्य को गति के सहारे आगे बढ़ना है और जीवन की बदलती अवस्थाएँ मनुष्य को केवल एक बार ही प्राप्त होती हैं । जीवन आगे बढ़ता जाता है । परन्तु प्राप्त काल को सुनहरा मौका मानकर ही हम निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे ।

_

संत तुकड़ोजी महाराज की राष्ट्रीय भजनावली

सच काम किया जग में जिसने, उसने प्रभु नाम लिया न लिया ।
अपने मन को बस में ही किया, वह चारों ही धाम गया न गया ।
है जिसके जबां पर प्रेम भरा, कटुता-पटुता का गर्व नहीं ।
हर मानव से समता जिसकी, वह मंदर ध्यान किया न किया ।
सेवा ही बना जीवन जिसका, बदला न चाहे दिल से किसीका ।
जो मस्त रहे अपने धुन में, वह गुरु का मंत्र लिया न लिया ।
सब भेख बराबर है जिसको, सब संत और पंत से प्रेम वही ।
जिसके भाषण में झूठ नहीं, वह ग्रंथ का पाठ किया न किया ।
यदि मौत भी आये किसी क्षण में या संकट पर्वत प्रायः पड़े ।
तुकड़या कहे जो डरता न उसे, तब औरों का साथ मिला न मिला ।

_

वृद्धा अवस्था अपनी और अपनों की

ओम प्रकाश सिंह
अधीक्षण अभियंता

जीव जब संसार में आता है तो उसकी जीवन यात्रा शुरू हो जाती है। इस यात्रा में जीवन के चार पड़ाव आते हैं। प्रथम है 'बचपन' द्वितीय 'युवा' तृतीय 'प्रौढ़' और चतुर्थ 'वृद्धावस्था'।

अपनी और अपनों की वृद्धावस्था पर लेखन से पूर्व उचित रहेगा कि प्रथम तीन अवस्थाओं का जिक्र संक्षेप में किया जाये, यह विषय की सतत परख के लिए आवश्यक भी है।

प्रथम बचपन, जब आदमी की कोई जिम्मेदारी नहीं होती। परवरिश करने वाले माता-पिता रहते हैं, कोई चिन्ता नहीं, कोई सामाजिक बोझ नहीं, हाँ आजकल पढ़ाई का दबाव जरूर रहने लगा है, सच बचपन इन्हीं शब्दों में गुजर जाता है कि "जो किया अच्छा, जो नहीं किया कोई बात नहीं" यह मस्ती करने की अवस्था है।

दूसरी युवा अवस्था कुछ करने की अपेक्षाएँ देश के लिए, समाज के लिए और अपने लिए उदाहरण के तौर पर देश के लिए खेलों में पदक जीतना, सामाजिक कार्यों को करना और अपने लिए धन अर्जन के मार्ग ढूँढना। अभी शरीर में बल है, मन में उन्माद और सब कुछ कर गुजरने की मानसिकता। कोई भी किसी भी तरह की रोक-टोक मन को अच्छी नहीं लगती बस एक सनक, "आ जा आसमाँ मेरी मुट्ठी में" यह मस्ती करने और सुख भोगने की अवस्था है।

तीसरी अवस्था प्रौढ़ एक ऐसी अवस्था जिसमें सब जिम्मेदारियों के बोझ को जीव अपने ऊपर लेकर ढोने लगता है। उसे धन अर्जित कर 'अपनों' को पालन है। समाज में अपनी स्थिति बनाये रखनी है, धर्म का कार्य भी करना है, अगर आर्थिक स्थिति ठीक न हो तो यह अवस्था समाज और अपने बीच पिसने में गुजर जाती है और अच्छी आर्थिक स्थिति होने पर जिम्मेदारियाँ अच्छे से निभ जाती है। निचोड़ यह कि यह जिम्मेदारियों की अवस्था या पड़ाव है।

अब आती है संसार से कूच करने से पूर्व प्रौढ़ अवस्था के बाद की 'वृद्धावस्था' फिर अपनी और अपनों में क्या फर्क? निश्चित ही यही वह अवस्था है जिसमें फर्क होने लगता है। अपनी वृद्धावस्था में अगर आप आर्थिक रूप से सक्षम हैं, फिर भी जब शरीर के अंग धीरे-धीरे काम करना बंद कर देते हैं या उन्हें काम करने में तकलीफ होती है तो हमें किसी और के सहारे की जरूरत पड़ती है। इस प्रक्रिया में हम किसी के सहारे हो जाते हैं, ऐसे ही मानसिक सहारे की हमें जरूरत पड़ती है। इसमें चूँकि यह चीज अपने उपर की रहती है और मानव के सहज स्वभाव वश हमें लगता है कि दूसरा व्यक्ति या सामने वाला व्यक्ति अगर यह कार्य नहीं कर रहा तो अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि इस अवस्था में हमें दूसरों से कुछ पाने की जरूरत बढ़ जाती है। वृद्धावस्था में शक्ति कम हो जाने से हम देशाटन आदि का कार्य भी सहजता से नहीं कर पाते तब लगता है कि कोई सहारा दे कर यह कार्य करवाये और न करवाने कि स्थिति में हमें यह कहते सुना जाता है कि 'सेवा सत्कार की भावना तो जैसे मर गयी है' कहने का तात्पर्य की कुछ पाने की मानसिकता बढ़ जाती है।

अब देखिये अपनों की वृद्धावस्था, बस अपनी और अपनों के बीच की दूरी काम आने लगती है, अपना कोई वृद्ध है और कुछ कर नहीं पाता तो, 'बैठे-बैठे रोटियाँ तोड़ रहे हैं और आदेश दे रहे हैं' हमारे मुँह से न भी निकले पर मन में तो आ ही जाता है। अब अगर अपनों को सहारे की जरूरत चलने आदि में पड़ती है तो 'जब चला नहीं जाता तो चलने की क्या जरूरत है' यह हमारे मन में गुबार की तरह बढ़ता जाता है।

हाँ, ऐसे भी लोग हैं जिन्हें अपनी और अपनों की, दोनों ही अवस्था में एक मानसिकता ही रहती है परन्तु ऐसे लोगों की गणना शायद उंगलियों पर की जा सकती है।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि 'अपनी और अपनों की' के बीच जो अन्तर है, उसका उद्गम मानव की 'मैं और मेरा' तथा तू और तेरा' की मानसिकता से है।

अगर हम 'मैं और मेरा' तथा तू और तेरा' से हटकर सोच सकेंगे तो 'अपनी और अपनों की' के बीच का अन्तर अपने आप मिट जायेगा। तब वृद्धावस्था, बचपन की तरह लुभावनी हो जायेगी और हरेक वृद्ध, वृद्ध होने पर भी गर्व कर सकेगा।

_

मोबाइल - ये हो मुसीबत, न हो मुसीबत

सुश्री सुमेधा राजाध्यक्ष, अ.श्रे.लि.

बस से यात्रा करते वक्त मैं हर रोज की तरह मोबाइल में यह चेक कर रही थी कि किसके मिस कॉल आये, कौनसे मेसेज आए। यह मेरी रोज की आदत बन गयी है। तभी मेरे ध्यान में आया कि मोबाइल पे रेंज नहीं है, इसलिए मैंने साथ में बैठी हुई औरत से पूछा, 'आपके मोबाइल में रेंज है?' वह बोली, 'नहीं, मेरे पास मोबाइल नहीं है।' मैंने आश्चर्य से उनसे पूछा, 'क्या आपके पास मोबाइल नहीं है?' वह बोली, 'नहीं'। इस संवाद के बाद मैं सोचती रही कि क्या मोबाइल इतना जरूरी है? आज के जमाने में भी कुछ लोग मोबाइल के बिना भी जीते हैं। आज जीवन में रोटी, कपड़ा और मकान के साथ-साथ मोबाइल भी उतना जरूरी हो गया है।

आज मोबाइल से हम कहीं भी रेल्वे, बस में गाने सुन सकते हैं। आज की इस गतिमान जिंदगी में हम हमारे रिश्तेदारों से, दोस्तों से उनके घर जा कर मिल नहीं सकते, इतना वक्त ही नहीं होता, पर हम मोबाइल से कहीं पर भी उनसे बात कर सकते हैं। होली, दिवाली जैसे उत्सवों के लिए हम दोस्तों, रिश्तेदारों को शुभकामनाएँ एसएमएस द्वारा भेज सकते हैं। आज मोबाइल से इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग भी करते हैं। मोबाइल से हमें अपने बैंक के खाते की शेष राशि का पता चलता है। मोबाइल द्वारा हम मेल भेज सकते हैं। बारिश या यातायात की असुविधा के कारण, ट्रैफिक जाम से हम कहीं फसें हैं तो घरवालों को हम इतल्ला (संपर्क) कर सकते हैं। ताकि घरवाले परेशान न हों। मोबाइल हो तो घड़ी की भी जरूरत नहीं है। हमें टाइम का पता चलता है। सुबह जल्दी उठना है तो हम अलार्म लगा सकते हैं। मोबाइल पर हम दोस्तों के, रिश्तेदारों के फोन नम्बर चाहे ऑफिस, घर या मोबाइल के हों, सारे एक साथ सेव कर सकते हैं और जरूरत के अनुसार उनसे संपर्क कर सकते हैं। इसलिए अलग से फोन के लिए डायरी रखने की भी जरूरत

नहीं है । हम मोबाइल से फोटो खींच सकते हैं, वीडियो शूटिंग कर सकते हैं । कैमरे की जरूरत नहीं है ।

बच्चों के लिए तो यह एक खिलौना है । इसमें बहुत सारे गेम्स बच्चे खेल सकते हैं । अगर हिसाब-किताब करना है और कैलकुलेटर पास नहीं है तो भी आपको असुविधा नहीं होगी, क्योंकि मोबाइल में कैलकुलेटर भी है । इन सारे कार्यों में मोबाइल का उपयोग होता है । मोबाइल न हो तो हमें घड़ी, फोन की डायरी, कैमरा, रेडियो, बच्चों के लिए खिलौने, कैलकुलेटर इतनी सारी चीजें साथ रखनी पड़ती । दोस्तों को, रिश्तेदारों को तार, पत्र द्वारा शुभ संदेश दिये जाते, जो आज एक एसएमएस से दिये जाते हैं । मोबाइल न हो तो हम कहीं पर भी अपने रिश्तेदारों से बात नहीं कर सकते । हमें घर, ऑफिस के फोन या पी.सी.ओ. पर ही निर्भर रहना पड़ता । मोबाइल नहीं हो तो हमें यह पता नहीं चलता कि आज किस-किसने आपको फोन किया । मोबाइल से हमें फोन नम्बर और टाइम का भी पता चलता है । मोबाइल न हो तो ट्रॉफिक जाम, या बारिश जैसी मुसीबत की घड़ी में हम घर वालों से संपर्क नहीं कर सकते और घर वालों की परेशानी बढ़ती है । घर में कुछ जरूरी चीजें लानी हो, तो घर के लोग मोबाइल पर संपर्क करके बाहर गये लोगों से बोल सकते हैं कि कार्यालय से घर आते समय वह चीजें ले कर आएँ । इसमें उन्हें वापस उन चीजों के लिए न जाना पड़ता । मोबाइल न हो तो हम संपर्क नहीं कर सकते ।

ऐसा नहीं है कि मोबाइल के सिर्फ अच्छे परिणाम ही हैं, कुछ मुसीबतों का भी सामना करना पड़ता है । अगर आप किसी बैठक में या सत्संग में हों, और आपके मोबाइल की रिंग बजी तो सबकी नज़रें आप पर होती हैं । 'इतना भी नहीं समझते की मोबाइल सायलेंसर पर रखना चाहिए' ऐसी तानाकसी सुननी पड़ती है । मोबाइल का जरूरत से ज्यादा उपयोग करने पर मोबाइल टॉवर द्वारा आने वाले रेडियो लहरों से शरीर और मस्तिष्क पर बुरा असर होता है । शर्ट की जेब में लगातार रखने पर हार्ट पर असर होता है ।

आजकल लोग मोबाइल में इयर-फोन लगाकर बातें करते हैं, गाने सुनते हैं । लगातार इयर-फोन लगाकर गाने सुनने से कान का पर्दा खराब हो जाता है । कम सुनाई देता है । कॉलेज के बच्चों को तो होश भी नहीं रहता । गाने सुनते-सुनते रास्ता क्रॉस करते हैं और एक्सिडेंट का शिकार हो जाते हैं । बच्चे पढ़ाई छोड़कर मोबाइल पर गेम्स खेलते बैठते हैं, इनसे उनकी आँखों पर बुरा असर होता है ।

सुबह, दोपहर, रात किसी भी वक्त रिंग बजती है, या कोई मेसेज आता है, इससे नींद में बाधा आती है । कभी-कभी तो फालतू मेसेज भी पढ़ने पड़ते हैं । आयडिया वाले या एयरटेल वाले फोन कर करके या एसएमएस भेज-भेज कर मेमोरी फुल करते हैं । वे अपनी स्क्रीमों के बारे में बताते हैं और परेशान करते हैं ।

हर एक चीज के दो पहलू होते हैं । कुछ अच्छे और कुछ बुरे । मोबाइल भी एक ऐसी चीज है जिसके बहुत सारे उपयोग हैं और कुछ दुरुपयोग भी हैं । हमें मोबाइल से होने वाली बुरी चीजों को ध्यान में रखकर मोबाइल का आवश्यकतानुसार उपयोग करना चाहिए ।

नेत्र - दान

हमारे नेत्र हैं भगवान से मिले, अनमोल रत्न,
इनका करो अच्छी तरह से जतन,
और मरने के बाद करो इनका दान,
मिलेगा इससे पुण्य चार धाम यात्रा समान ।

श्रीमती आरती देशमुख, अ.श्रे.लि.

अंधकार है जिनके जीवन में,
जीवित होते हुए भी,
उजाला होगा उनके जीवन में,
आपके मरने के बाद भी ।

श्रीमती अदिति पालकर, अ.श्रे.लि.

नेत्रदान करने से अपना कुछ नहीं जायेगा,
अंधे को बहुमूल्य दृष्टि का उपहार मिलेगा,
वरना यह तन यूँ ही खाक में मिल जायेगा ।

श्री शिव कुमार हरिद्वज, आशुलिपिक

मृत्यु के बाद अपनी आँखें हैं जिन्दा रहतीं,
किसी की अँधेरी दुनिया को रोशन है करती ।

श्रीमती छाया सागरे, अ.श्रे.लि.

मरने के बाद नेत्र को व्यर्थ न जलाओ,
नेत्रदान करके अँधों का आशीर्वाद पाओ ।

श्रीमती ऋता राणे, उ.श्रे.लि.

_

राजभाषा का प्रयोग

हिन्दी भाषा है सरल, सुगम
संस्कृत भाषा में है इसका उगम,
इसका हम प्रयोग करें हर दम
रखें भारत को आगे एक कदम ।

श्रीमती आरती देशमुख, अ.श्रे.लि.

जन-जन की भाषा हिन्दी को
मिला है राजभाषा का सम्मान ।
राजभाषा का करके प्रयोग,
कार्यालय में पाओ कई ईनाम ।

श्रीमती सुमेधा राजाध्यक्ष, अ.श्रे.लि.

(साभार-हिन्दी दिवस 2010: स्लोगन प्रतियोगिता)

_

_
